NAVBHARAT TIMES, Delhi, 2.12.2023
Page No. 4, Size:(16.73)cms X (12.20)cms.

15 मीटर लंबी होगी पहली बुलेट ट्रेन की 'नाक'

Maneesh.Aggarwal
@timesgroup.com

■ **नई दिल्ली :** भारत की पहली बुलेट ट्रेन की नाक (नोज) 15 मीटर लंबी होगी। ऐसा उसके ट्रैक पर फर्राटा भरते और सुरंग से निकलते वक्त होने वाले शोर कम से कम करने के लिए होगा। शोर रोकने के लिए ट्रैक के दोनों ओर नॉइज बैरियर भी लगाए जाएंगे।

बहुत होता है बुलेट ट्रेन का शोर, बचाव की तैयारी : ट्रेन नैशनल हाई स्पीड रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड (NHSRCL) के अधिकारियों ने बताया कि भारत की पहली बुलेट ट्रेन जापान की शिनकानसेन ई-5 सीरीज की बुलेट ट्रेन होगी। इसकी नोज 15 मीटर लंबी होने के पीछे कई कारण है। इसमें सबसे अहम है, इसके 320 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से ट्रैक पर दौड़ते समय निकलने वाले शोर को कम से कम करना। क्योंकि, जापान में भी जब बुलेट ट्रेन चली थी, तब उसका शोर बहुत अधिक होता था। इसके बाद इस तरह की तकनीक के साथ कई और तकनीक के माध्यम से शोर को बेहद कम कर दिया गया। इसी वजह से भारत की पहली बुलेट ट्रेन की नोज भी 15 मीटर लंबी होगी। इसके आगे के भाग में ट्रेन को चलाते वक्त कई अन्य तकनीकी सिस्टम लगे होंगे, जो ट्रेन चलाने वाले पायलट की मदद करेंगे।

ट्रैक के आसपास के लोग नहीं होंगे परेशान : अधिकारियों ने बताया कि भारत में मुंबई से गुजरात के साबरमती के बीच चलने वाली बुलेट ट्रेन के ट्रैक के दोनों ओर जरूरत के मुताबिक नॉइज बैरियर भी लगाए जाएंगे, ताकि जहां-जहां भी ट्रैक से कुछ दूरी पर कोई रिहायशी या औद्योगिक इलाका है, वहां लोगों को इसके चलने से होने वाले शोर से कोई परेशानी ना हो। बुलेट ट्रेन के अंदर भी फर्श और बॉडी को इस तरह से बनाया जाएगा। इससे बाहर का शोर ट्रेन के अंदर बैठने वाले यात्रियों को सुनाई ही ना दे। अधिकारियों का कहना है कि यह ट्रेन जापान में चलने वाली बुलेट ट्रेन ही होगी, बस इसमें कुछ फीचर भारतीय मौसम और परिवेश के हिसाब से बदले जाएंगे।

शोर रोकने के लिए लगेंगे नॉइज़ बैरियर

- भारत की पहली बुलेट ट्रेन जापान की शिनकानसेन ई-5 सीरीज की होगी
- यह ट्रेन 320 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से ट्रैक पर दौड़ेगी
- चलती बुलेट ट्रेन से निकलने वाले शोर को कम करने के लिए लंबी होगी नोज

NBT Lens — समझिए खबरों के अंदर की बात

क्यों माना जा रहा है अहम?

भारत में चलने वाली इस बुलेट ट्रेन का सफर बेहद शानदार होगा। इस अनुभव को और शानदार बनाने के लिए सरकार भी कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ रही है। दुनिया की बेस्ट प्रैक्टिस को यहां बुलेट ट्रेन चलाने के लिए अपनाया जा रहा है। इसमें ट्रेन के अंदर सफर करने वालों को ऐसा लगेगा ही नहीं कि वह 320 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ रही बुलेट ट्रेन में सफर कर रहे हैं। ट्रेन का सस्पेंशन बहुत अच्छा होगा। इससे ट्रेन के अंदर बैठे लोगों को हाई स्पीड का अंदाजा नहीं लग सकेगा। ट्रेन के कोच भी डबल स्किन वाले होंगे। इससे ट्रेन की साउंड अंदर बैठे यात्रियों को परेशान ना करे। एक्सपर्ट का कहना है कि इसका मतलब यह भी नहीं होगा कि जब बुलेट ट्रेन चलेगी तो बाहर लोगों को इसके शोर से परेशानी होगी।